पूर्व मध्य काल में कृषि

डॉ.विजय प्रकाश मिश्रा (असिस्टेंट प्रोफेसर)

व्याव्हारिक अर्थशास्त्र विभाग

जे. एन. पी. जी. कॉलेज लखनऊ

प्राचीन भारत में कृषि क्रिया कलापों के विकास और विस्तार की कहानी बहुत ही लम्बी है। भारतवर्ष की भौगोलिक बनावट ही कृषि और कृषिपरक क्रियाकलापों के विकास और विस्तार के लिए इतनी अनुकूल थी कि कृषि का यदि यहां अत्यंत प्रारम्भ में ही श्रीगणेश न हो जाता तभी आश्चर्य की कोई बात होती। भारत में कृषि का साक्ष्य बहुत ही प्राचीन काल से प्राप्त होता है । पूरे विश्व की बात की जाए तो कृषि का साक्ष्य 8000 ई0पू0 पूरानी है और अगर भारत वर्ष की बात की जाए तो इसकी शुरूआत 5000ई0पू0 में हुआ था। इस प्रकार कृषि का इतिहास बड़ा ही लम्बा है। भारत में खाद्य उत्पादन 5000 ई0पू0 उत्तर पश्चिम क्षेत्र के बलूचिस्तान में मिलता है।

1- इस संबंध में हमकों यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि मानव ने जब पहली बार कृषि करना शुरू किया होगा तो उसने अपनी खेती जंगल से शुरू किया होगा अर्थात किसी भी फसल का पूर्वज यह माना जा सकता है कि वन्य फसल होता है। भारत में कृषि का जो पुरातात्विक साक्ष्य मिलता है यह सिन्ध और बलुचिस्तान की सीमा पर बेलन नदी के किनारे मेहरगढ़ नामक स्थान से प्राप्त होता है। यहां से गेहूँ और जौ की किस्म प्राप्त हुई है।

2- कश्मीर के बुर्जहोम से कृषि के साक्ष्य 2500 ई0पू0 के आस-पास गेहूँ और जौ के साक्ष्य मिलते है। उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी में भी कृषि के प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हुए है। हड़प्पा सभ्यता का अध्ययन करने पर पता चलता है कि इस सभ्यता के विकास से पहले ही कृषि का विकास हो चुका था । आर्थिक इतिहास का अध्ययन करने वाले इतिहासकारों का मत है कि ऋग्वैदिक काल तक कृषि का पूर्ण विकास हो चुका था। कृषि ऋग्वैदिक आर्यो का प्रमुख व्यवसाय था इसीलिए उन्होंने वर्षा के लिए अनेक प्रार्थनाएं की है । भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए नदियों से प्रार्थना की हैं। धीरे-धीरे जैसे समय आगे की तरफ बढ़ता गया कृषि का क्षेत्र भी विस्तृत होता गया। कुछ विद्वान आर्यों का व्यवसाय पशुपालन को भी मानते है।

3- बौद्ध ग्रंथों में भी कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। दीर्घनिकाय में कृषिकों की सहायता करने वाले पर बल दिया गया है।

4- इस समय कृषि उपकरणों में लोहे का प्रयोग किया जाने लगा था। जिससे कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन आया और कृषि का विकास तेजी बढ़ा। कौटिल्य ने भी कृषि का उल्लेख किया है। कौटिल्य ने पशुपालन, कृषि और व्यापार के लिए एक शब्द वार्ता का प्रयोग किया है। कौटिल्य ने कृषि को अन्य व्यवसायों में श्रेष्ठ माना है क्योंकि इससे मिलने वाला लाभ निश्चित है।

5- पतंजली ने भी कृषि उपकरणों की जानकारी दी है। वराहमिहिर एवं कालिदास के भी कृषि को महत्वपूर्ष स्थान दिया है। जहां कृषि को वराहमिहिर के वार्ता में शामिल किया है। वह कालिदास ने राष्ट्रीय समृद्धि का प्रमुख साधन मानते है।

6- अमरकोष में भी खेती के दो नामों का प्रमाण प्राप्त है । इसमें कृषि यंत्रों का भी वर्णन मिलता है ।

जिस प्रकार समय बढ़ता गया वैसे-वैसे समय के साथ परिवर्तन और उतार चढ़ाव होता गया। पूर्व मध्य काल तक कृषि का विस्तार और भी बढ़ गया, सामंतीय प्रथा का प्रचलन बढ़ा, नगरों का पतन होता गया, वास्तविक संगठनों की संख्या में कमी आती गयी, कम संख्या में सिक्के जारी किया जाने लगा। आदि कारणों से व्यापार आदि कार्यों में कमी आयी। जिसका प्रभाव ये पड़ा कि कृषि पर पड़ने वाला दबाव बढ़ गया। कौटिल्य के समकालिन माने जाने वाले कामन्दक और सोमदेव के विचारों से कृषि के महत्व का पता चलता है। कामन्दक के अनुसार जो व्यक्ति वार्ता और व्यापार में निपुण हो वह कभी निर्धन नही रह सकता अर्थात वह व्यक्ति विश्व का सबसे धनी व्यक्ति में गिना जाता था।

7- पूर्वमध्य काल में कृषि को धनोपार्जन का प्रमुख साधन के रूप में जाना जाने लगा और यह जीवन निर्वाह का आधार बन गया। कृषि के लिए मेले का आयोजन होता था जिसमें कृषि संबंधी उपकरण और जानवरों की विक्री की जाती थी। इसका प्रचलन इससे पहले कही पर भी प्राप्त नहीं होता है।

इस काल में कृषि करने का अधिकार चारों वर्गों को था, परन्तु मुख्यतः वैश्य कृषि कार्यों को करते थे।

कृषि को भूमिदानों ने भी बढ़ाया। अनेक ब्राह्मण भू-स्वामी और जमीदार हो गये, इसीलिए पूर्वमध्य काल में कुछ इतिहासकारों और लेखकों ने कृषि को सभी वर्गों के लिए सामान्य मान लिया। ब्राह्मण को भी राज्य के लिए सामान्य कर देने की बात की गयी। पूर्वमध्य काल में लगभग सभी खाद्यानों की खेती की जाती थी

अर्थात उस समय से पहले जो भी कृषि हुई इस काल में भी निरंतर चलती रही। इस काल में चना लोगों के लिए लोकप्रिय हो गया था।

8-गेहूँ, चना, राजमा, मटर, मसूर, मूंग, अरहर, धान आदि की कृषि की जाती थी। अन्न के साथ-साथ फल की भी खेती की जाती थी जिसमें नारंगी, अंगूर, खजूर, नारियल, आम, केला, कटहल आदि फलों का भी उल्लेख मिलता है। फल के साथ-साथ साग और सब्जी का भी कृषि कार्य करने का उल्लेख मिलता है। जिसमें मूली, बैंगन, आलू, प्याज, ककड़ी आदि की खेती के प्रणाण हमकों प्राप्त होता है।

9- साग के रूप में बथुआ, राही, पाठा और सरसों की खेती की जाती थी।

10- उपज को अधिक बढ़ाने के लिए खाद का प्रयोग भी किया जाता था। खाद का प्रयोग का विवरण हर्ष द्वारा रचित हर्षचरित से प्राप्त होता है। हर्षचरित्र से यह पता चलता है कि कृषक बंजर पड़ी भूमि को भी खाद का प्रयोग करके उसको उपजाऊ बनाते थे। इस खाद को वह बैलगाड़ी से लादकर खेतों तक ले जाते थे।

11- मध्ययुगीन कोषग्रंथ पर्यायमुम्वावली में अन्न की विस्तृत सूची प्राप्त होती है जिसमें गेहूँ, जौ, तिल, दाल आदि का विवरण प्राप्त होता है। बहुत यात्री विवरण से भी कृषि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। जैसे- मार्कोपोलों ने बंगाल में कपास के उत्पादन की बात कही है। अदरक और दालचीनी का उत्पादन पाण्डय राज्य में ज्यादा होने की बात करता है।

12- इस समय गुजरात कपास की खेती तथा नील के खेती के लिए प्रसिद्ध था।

इस प्रकार इस काल में खेती का बहुत ही विकास हुआ। यह विकास इस बात से स्पष्ट होता है कि ग्यारहवी शताब्दी में अनेक ग्रंथों की रचना हुई जिसमें कृषिपरासर, वृक्ष्यायुवेदआदि शामिल है। जिसमें कृषि करने तथा वृक्ष लगाने के उपाय सुझाये गये है। पूर्वमध्य काल में बाहर से आने वाले आक्रमणकारियों ने अपने-अपने ढ़ंग और तरीकों को भी भारत पहुंचाया। जिससे कृषि के तौर-तरीकों में वृद्धि हुई। उनके नये तरीके के उपकरणों के प्रयोग से भी कृषि में बहुत वृद्धि हुई। उनके साथ आने वाले विद्वानों, लेखकों और यात्रियों के द्वारा भी कृषि के बारे में जानकारी मिलती है। जो खेती भारतवर्ष के बाहर होते थे उसकी भी जानकारी उनसे प्राप्त हुयी और उसका लाभ भारतीय कृषक उठा सके। प्रसिद्ध इतिहासकार आर0 एस0 शर्मा ने पूर्वमध्य काल के कृषि का विवरण देते हुए बताते है कि इस समय का मूलाधार कृषि ही था। इस समय व्यापार वाणिज्य बहुत कम हो गया था। 600 ई0 तथा् 1000 ई0 के बीच के काल में कृषि का विकास हुआ और जो नगर व्यापार पर आधारित थे उनका विनाश हुआ। इसका सबसे बड़ा कारण सामंतीय व्यवस्था का बढ़ता विकास था। इसी सामंतीय व्यवस्था ने

जमीदारी प्रथा में बढ़ोतरी कर दी। इस काल की कृषि को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया गया और कृषिशास्त्र में अद्भूत बढ़ोतरी हुई। समय के साथ-साथ कृषि में परिवर्तन होते गये।

संदर्भ सूची:-

1. ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास, चतुर्थ संस्करण, नई दिल्ली,1997 पृ सं-3
2. कृष्ण मोहन श्रीमाली, वैदिक साहित्य में प्रतिबिम्बित भारत पृ सं-123
3. दीर्घनिकार्य 1/135 (अनुवादित- भिक्षु जगदीश कश्यप), राजकीय बिहार पाली प्रकाशन (बिहार सरकार), नालंदा (प्रथम संस्करण)
4. ओमप्रकाश पृ सं-8 (द्वितीय संस्करण)
5. रघुवंश ,16/2, भारत प्रकाशन मंदिर,अलीगढ,
6. कामंद का नितिसार, पृ सं-12
7. ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास, पंचम संस्करण, पृ सं-165
8. मानसोल्लास,3 (अंग्रजी अनुवाद- G.K.Shrigondekar-2vol)
9. अमरकोश पृ सं-165
10. हर्षचरित (अनुवाद- वासुदेव अग्रवाल) पृ सं-183
11. मार्कोपोलो ट्रेवेल्स 2 पृ सं- 115